International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-07-2020; Accepted: 20-07-2020; Published: 06-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 90-92

ममता कालिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हेमलता साह [1], रेशमा अंसारी [2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

प्रस्तावना

जन्म के उपरांत हमारा लालन–पोषण जिस वातावरण में उससे हम विशेष रूप से प्रभावित रहते हैं और हमारे व्यक्तित्व का विका होता रहता है। व्यक्तित्व के अंतर्गत आंतरिक एवं बाह्य दोनों गुण समाहित रहते हैं। मनुष्य की उन्नति और विकास के लिए परिवार को एक अनिवार्य आवश्यकता माना जाता है। मोटी दृष्टि से देखें तो मनुष्य का जन्म ही परिवार के माध्यम से होता है। मनुष्य जिन गुणों, विशेषताओं के कारण सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी, भगवान का राजकुमार कहा जाता है, उनका विकास करने के लिए तो परिवार की आवश्यकता अनिवार्य रूप से पड़ती है। परिवार समाज की एक छोटी इकाई है। जिसके आधार पर मनुष्य स्वयं में सामाजिक गुणं का विकास कर दुर्लभ लाभ प्राप्त करता है।[1]

जिस परिवार में व्यक्ति जन्म लेता है वह उसकी प्रथम पाठशाला होती है जहाँ उसे पारिवारिक वातावरण, संस्कार आदि के माध्यम से परोक्ष शिक्षा प्राप्त होती है। ममता कालिया का जन्म उत्तरप्रदेश के मथुरा में वृंदावन स्थित कनेडियन अस्पताल में 2 नवंबर सन 1940 को हुआ था। उनका बचपन मथुरा में ही बीता। उनके पिता का नाम श्री विद्याभूषण अग्रवाल था। श्री अग्रवाल जी आकाशवाणी में विभिन्न स्थानों पर केंद्र निदेशक के पद पर कार्यरत रहे। सरकारी नौकरी से पूर्व वे कई नौकरियों में रहे। चम्पा अग्रवाल इंटर कॉलेज और श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स में प्राध्यापन के बाद सिर्फ 31 साल की आयु में वे भिवानी के वैश्य कॉलेज में प्रिंसिपल बन गये। तब प्रिंसिपल का पद रौबदाब वाला था। भिवानी वे सिर्फ एक साल रहे। उसके बाद वे शम्भूदयाल इंटर कॉलेज, गाजयिाबाद के प्रिंसिपल बने। श्री अग्रवाल हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य के अच्छे विद्वान रहे और उनके घर पर जैनेंद्र, विष्णु प्रभाकर जैसे विद्वानों का आना–जाना लगा रहता था और ममता जी की परोक्ष शिक्षा ऐसे ही विद्वानों को देखते–सुनते अबाध गति से चलती रही।

भारत के दक्षिण भाग के अलावा ममता जी देश के अधिकांश बड़े शहरों में रह चुकी हैं क्योंकि दूरदर्शन में केंद्र निदेशक के पद पर कार्यरत होने की वजह से उनके पिता का प्रायः तबादला हुआ करता था। ममता जी का पारिवारिक वातावरण प्रारंभ से साहित्यिक रहा है। स्वयं उन्हीं के शब्दों में –"मेरे घर का वातावरण साहित्यिक चेतना से भरपूर था। घर के पांच कमरों में से चार कमरों में पुस्तकें रखी हुई थीं। साहित्य पढ़ने की आदत बहुत बचपन से ही पड़ गई।" [2]

दिसंबर 2003 में बहाव पत्रिका में अमरकांत और बदरीनारायण के साथ प्रकाशित बातचीत में ममता जी कहती हैं – "जब से होश संभाला, घर में लंबी–लंबी आलमारियों में, रैक पर, आले में, बिस्तर पर, मेज पर, पेटियों पर, हर जगह किताबें रखी देखी। यहाँ तक की बाथरूम में भी किताबें और पत्र–पत्रिकाएं। पापा को न पान का शौक था, न सिगरेट का, न उन्होंने कभी शराब छुई, न कभी पार्टियों में जाना पसंद किया। उनका एकमात्र व्यसन किताब था। वे आधी–आधी रात तक पुस्तकों में डूबे रहते। जब मैं तमाम शाम दोस्तों के साथ पक्के मारकर वापस घर लौटती, वे कोई न कोई ऐसा जटिल प्रश्न करते, जिसका उत्तर देने के लिए मुझे किताबों में गोता लगाना पड़ता। बस इसी तरह रोज नई उत्कंठा ने जन्म लिया। संसार के दुर्लभ क्लासिक भी लड़कपन में पढ़ डाले। उस समय मूर्खतावश यह भी सोचा कि इसमें क्या है, हम भी लिख डालें ऐसा। कलम उठाने पर ही पता चला कि सामान्य से सामान्य रचना को भी विश्वसनीय बनाना कितनी बड़ी चुनौती है। गुरुजनों (मास्टर्स) की तरह लिखना लगभग असंभव कला है।" [3]

शिक्षा– ममता कालिया की पूरी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से हुई। मुंबई, पूणे, नागपुर, इंदौर, दिल्ली में उन्होंने पढ़ाई पूर्ण की। ममता जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. अंग्रेजी साहित्य में किया और उन्हें विश्वविद्यालय में विशेष स्थान प्राप्त हुआ।

साहित्यिक वातावरण– ममता जी को प्रसिद्ध साहित्यकार बनाने में परिवार ने अहम भूमिका निभाई। इंदौर के क्रिश्चियन कॉलेज में बी.ए. की पढ़ाई के दौरान ही ममता जी का रुझान साहित्य की ओर हुआ जिसमें पारिवार के साहित्यिक वातावरण की भूमिका काफी महत्वपूर्ण थी। मेरे साक्षात्कार में मीनू रानी दुबे से 22 दिसंबर 1991 में स्वतंत्र भारत में प्रकाशित बातचीत में ममता जी बताती हैं "मैं जब इंदौर में बी.ए. पढ़ रही थी, उन दिनों घर, कॉलेज और शहर तीनों ही जगह साहित्य संबंधी सरगर्मियां थीं। कॉलेज में आए दिन वाद–विवाद प्रतियोगिता, कवि–गोष्ठियां और विद्वानों के व्याख्यान हुआ करते थे। पापा (श्री विद्याभूषण अग्रवाल) रेडियो में वरिष्ठ अधिकारी थे। सभी प्रमुख साहित्यकारों से उनका संपर्क था। उस जमाने में रेडियो अभिव्यक्ति का एक बहुत सशक्त माध्यम माना जाता था। आज की तरह घटिया लेखकों का गढ़ नहीं था वह। मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे दिग्गजों के दर्शन मुझे उन्हीं दिनों हुए। घर में साहित्यकारों के प्रति जो सम्मान की भावना थी। शायद उसी का आनंद लेने के लिए मैं साहित्य की ओर मुड़ी। [4]

रचनाकार बनने की परिस्थितियाँ –ममता जी की पढ़ाई अग्रेजी माध्यम से हुई और अंग्रेजी माध्यम की छात्रा होने की वजह से स्वाभाविक रूप से वे अंग्रेजी मे ही लेखन कार्य करना चाहती थी। लगभग 16 वर्ष तक उनके मन में यही था कि वे अंग्रेजी या फ्रेच में लेखन कार्य करे। लेकिन इदौर आने के बाद उनकी सोच और उनका जीवन पूरी तरह बदल गया। यहीं पर ममता जी को हिन्दी का माहौल मिला और उनकी दशा व दिशा दोनों बदल गई। जैसा कि वे मेरे साक्षात्कार मे मनोज कुमार पाण्डेय से हुई चर्चा मे बताती है "पिता शासकीय सेवा मे थे, आकाशवाणी में कार्यरत थे, इसलिए सभी प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार–कलाकार अकसर मेरे घर मे आया करते थे। पिताजी साहित्यकार नही थे, लेकिन साहित्य मे गहरी रूचि रखते थे। इससे मेरे घर का माहौल, विशेषकर इदौर मे, हिन्दीमय हो गया था। क्रिश्चियन

कॉलेज में मेरा दाखिला हुआ था, वहां के सांस्कृतिक माहौल का भी मेरे व्यक्तित्व पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। यहीं पर मुझे ऐसा लगा कि मै अंग्रेजी की बजाय हिन्दी मे बेहतर लिख सकती हूं। समकालीन रचनाकारो में जिसमें सरोजकुमार, चंद्रकांत देवताले आदि थे, मुझे प्रभावित भी किया और प्रेरित भी।"[5]

ममता जी के घर का वातावरण साहित्यिक चेतना से परिपूर्ण था। उनके घर के पांच कमरों में से चार कमरों में पुस्तकें रखी हुई थीं। बकौल ममता – "साहित्य पढ़ने की आदत बहुत बचपन से ही पड़ गई। उसके बाद लिखना मेरे लिए वैसा ही था जैसा बच्चा घुटनो से चलते हुए अचानक एक दिन लड़खड़ाकर खड़ा हो जाए।"[6] ममता जी के परिवार के संस्कारों ने उन्हें रचनाकर्म के प्रति बालपन से ही प्रेरित किया। अपने संस्मरण 'कितने शहरों में कितनी बार' में वे लिखती हैं – "जन्मदिन पर भी किताबें ही मिलती थीं पापा से। वे शिक्षा में मनोरंजन मिला देते। वाकेब्युलरी गेम के अंतर्गत वे हमें कुछ शब्द लिख कर देते और कहते, श्श्इनके पर्यायवाची शब्द सोच कर लिखो।श्श सात साल की उम्र में मुझे एक भी दिन ऐसा याद नहीं जब मैं बिना कुछ पढ़े, पापा की नजर बचा कर सो सकी हूं।"[7]

वैवाहिक जीवन –ममता जी ने प्रसिद्ध लेखक रवीद्र कालिया के साथ प्रेम विवाह किया। रवीद्र से उनकी पहली मुलाकात चंडीगढ़ में आयोजित एक सेमीनार 'कहानी सबेरा' में हुई। उस दौरान ममता जी की कहानियाँ और कविताओ के प्रकाशन को चार–पाच वर्ष हो चुके थे। तब ममता जी ने रवीद्र जी की प्रसिद्ध रचनाओ 'नौ साल छोटी पत्नी', 'सिर्फ एक दिन', 'डरी हुई औरत', 'त्रास' को पहले से ही पढ़ रखा था और यह धारणा भी बना रखी थी कि नई कहानी को इन सशक्त रचनाओ के द्वारा अवश्य ही पीछे ढकेला गया है। मजेदार बात यह है कि ममता जी ने जब रवींद्र जी की कहानी 'नौ साल छोटी पत्नी' पढ़ने के बाद उन्हे विवाहित समझती थीं।

मेरे साक्षास्तार में मीनू रानी से हुई बातचीत में वे कहती है "रवि से विवाह करने के पीछे मंशा तो मेरी प्रेम ही थी, पर मेरी दिक्कत ये थी कि मैं इनरी कहानियों को पढ़ने के बाद यही समझती थी कि वे शादीशुदा हैं क्योकि नौ साल छोटी पत्नी उन दिनों काफी धूम मचा चुकी थी। 30 जनवरी 1965 को हम पहली बार मिले और 12 सितंबर, 1965 को हमारी शादी हो गई। और इस शादी में सबसे मदेजार बात ये थी कि हमने एक–दूसरे के बायोडाटा का कोई मिलान नही किया था।"[8] ममता और रवीद्र कालिया की पसद–नापसद भले ही मेल न खाती हो किन्तु उनका वैवाहिक जीवन सुखमय रहा। दोनो के बीच अनेक भिन्नताओं व मतभेद के बावजूद दोनों मे आपसी प्रेम और विश्वास की प्रबलता थी। 'सृजन के सहयात्री' में रवींद्र जी ने अपने संस्मरण में लिखा है – "कई बार लगता है, हम दोनों एक–दूसरे के विलोम हैं। जो मुझे पसंद है वह ममता को नापसंद। जो रंग ममता को पसंद है वह मुझे नापसंद। मुझे यदि निराला की कविताएँ पसंद हैं तो उसे मुक्तिबोध की। मुझे दिलीप कुमार पसंद है तो उसे आमीर खाँ। मुझे जूही चावला पसंद है तो माधुरी दीक्षित, मुझे शशि पसंद है तो उसे रवि।" [9]

ममता जी एक आदर्श पत्नी, जिम्मेदार बहू और स्नेहिल माँ तो थी हीं, साथ ही संवेदनशील, भावुक एव उनमे दूसरों की सेवा करने की प्रवृत्ति रही है। रवींद्र जी लिखते है – "ममता एक कथा लेखिका ही नही, अच्छी नर्स भी है। मैने अनेक अवसरो पर उसे अपनी माँ अथवा मेरी माँ की सेवा करते देखा है। जिन स्थितियो में औसत आदमी खौफ खाकर रोगी के पास से भाग जाय, वह अत्यंत लगन से सेवा में लगी रहेगी। मैं तो किसी को तड़पते या कहारते देख ही नही सकता। ममता इस दृष्टि से 'पत्थर दिल' है। वह बगैर घबराये या 'नवर्स' हुए धैर्यपूर्वक रात–रात भर जाग सकती है, रोगी की नींद लग जाये तो कहानी लिख सकती है।" [10]

ममता जी अपने नाम के अनुरूप ममतामयी रही हैं। रवींद्र जी के अनुसार "बच्चो के मन मे ममता की छवि 'साता क्लॉज' जैसी है। वह बहू–बेटी, पत्नी, लेखिका, प्रिसिपल तो बहुत बाद मे है, पहले माँ है। बच्चो ने जो फरमाइश रख दी, वह पूरी ही होगी, यह ममता का नियम है। मुझे यह भी नही मालूम रहता कि बच्चो की फीस कितनी है, उनके ट्यूटर को क्या दिया जाता है। अब तक वह इस हद तक ममतामयी हो गई हैं कि कई बार मुझे भी बच्चा समझने की भूल कर बैठती है। अगर कभी मैं किसी बात से नाराज हो जाऊँ तो वह मुझे भी उसी तरह मनाने की कोशिश करेगी, जैसे बच्चो को मनाया जाता है।"[11]

ममता जी और रवींद्र कालिया जी के सफल वैवाहिक जीवन का आधार था आपसी सामंजस्य और एक–दूसरे के प्रति अथाह प्रेम और सहयोग की भावना।

व्यक्तित्व–ममता कालिया जी बहुआयामी व्यक्तित्व की धनीं रही हैं। वे मानवता के प्रति संवेदनशील और एक अच्छी लेखिका होने के साथ–साथ अच्छी प्रेमिका, पत्नी, बहू, माँ और एक अच्छी सास भी हैं। रवींद्र जी लिखते हैं – अब तो बच्चे अपना बुरा–भला समझने लगे हैं, जब छोटे थे, उन्हें स्कूल भेजना सबसे बड़ी समस्या थी, खासकर उस स्त्री के लिए जिसका पति रात ग्यारह बजे के पूर्व खाता न हो और जिसे बगैर लिखे नींद न आती हो। किसी प्रकार बच्चों को स्कूल के लिए रवाना करने के बाद ममता सो जातीं। अफरातफरी से उसे नफरत है। हर काम वह इत्मीनान से करना चाहती है। ममता में परिश्रम करने की अद्भुत क्षमता है, वह एक साथ कई मोर्चों पर तैनात रह सकती है। एक तरफ कॉलेज की जिम्मेदारियाँ, घर की जिम्मेदारियाँ, दूसरी तरफ सभा–संगोष्ठियों के आमंत्रण, लेखन का दबाव–कई बार आश्चर्य होता है कि इतनी व्यस्तताओं के बीच वह लिखने का समय कब चुराती है। मैने उसे विचित्र स्थितियों में लेखन करते देखा है।"[12].

इस प्रकार हम देखते हैं कि ममता जी के व्यक्तित्व पर परिवार के परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके अलावा ममता जी के मन पर पर फिल्मों की तुलना में रंगमंच के नाटकों का खासा प्रभाव दिखलाई पड़ता है। पिता के बार–बार तबादले की वजह से 953 से 1955, 1965 से 1970 और 1985 फिर 1989 में ममता जी को मुंबई बार–बार जाना पड़ा। ममता जी के अनुसार – "फिल्मों से भी ज्यादा असर उन नाटकों का पड़ा जो बम्बई में देखे। पृथ्वीराज कपूर के नाटक 'पठान', 'दीवार' और 'आहुति' का बड़ा गहरा प्रभाव मन पर पड़ा। इनमें बड़ी सादगी से देश विभाजन, दहेज और वर्ग विषमता जैसी समस्याओं को दर्शाया गया था। ये कुछ 'बड़बोले' किस्म के नाटक थे पर अपने उद्देश्य में सफल। "[13].

बालपन से जो संस्कार ममता जी ने प्राप्त किया वह आज भी यथावत है। वे लिखती हैं – "हम दोनों बहनें पैदल स्कूल जातीं। हमारे स्कूल के बस्ते में एक थैला और कुछ पैसे रखे होते। वापसी में हम घर के लिए सब्जी खरीदते हुए जातीं। वही अभ्यास मेरा अब तक पड़ा हुआ है। मुझे इसमें कुछ भी असंगत नहीं लगता कि आफिस से निकल कर घर का सामान खरीदूं और लदी फंदी घर लौटूं।" [14].

सेवा – ममता कालिया जी दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा एस.एन.डी.टी., महिला विश्वविद्यालय मुम्बई में अंग्रेजी की प्राध्यापिका रहीं। 1973 से 2001 तक इलाहाबाद के महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज में प्राचार्या के पद को भी उन्होंने सुशोभित किया। यहीं से वे सेवानिवृत्त हुईं.। ममता जी भारतीय भाषा परिषद कोलकाता की निदेशक भी रहीं। वे महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दी' की सम्पादक रही हैं।

कृतित्व– बीसवीं शताब्दि के महिला उत्थान के युग में बहुआयामी व्यक्तित्व से परिपूर्ण ममता कालिया ने पूरे साहस के साथ अपनी

अभिव्यक्ति का सशक्त प्रस्तुतिकरण किया। यथार्थवादी साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकीं ममता कालिया के कृतित्व में उनकी मौलिक प्रतिभा का परिचय मिलता है। ममता जी ने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में रचना की है। उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबंध, कविताओं में उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं का गहराई से अंकन किया है। उनके साहित्य में मध्यमवर्गीय नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं और उनके समाधान से लेकर दाम्पत्य जीवन की परतों को गहराई से चित्रित किया है। 21वीं सदी में भी उनकी कृतियाँ प्रासंगिक हैं।

उपन्यास – बेघर –1971, नरक दर नरक –1975, प्रेम कहानी –1980, लड़कियां –1984, एक पत्नी के नोट्स – 1997, दौड़ (लघु उपन्यास) –2000, दुक्खम–सुक्खम –2008, अंधेरे का ताला –2009 ।

कहानी संग्रह – छुटकारा –1969, सीट नंबर छह –1978, एक अदद औरत –1979, प्रतिदिन –1983, उसका यौवन –1985, जाँच अभी जारी है –1989, चर्चित कहानियाँ –1995, बोलने वाली औरत–1998, मुखौटा –2003, निर्मोही–2004, ममता कालिया की कहानियाँ (खंड–1)–2005, ममता कालिया की कहानियाँ (खंड–2)–2006, थिएटर रोड के कौवे –2006, इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ –2009, खुशकिस्मत–2010, थोड़ा सा प्रगतिशील–2014।

नाटक एवं एकांकी – आत्मा अद्दनी का नाम है – 1977, यहाँ रोना मना है – 1980, आप न बदलेंगे – 1989, जान से प्यारे।

काव्य संग्रह – ज्तपइनजम जव चंचं ंदक वजीमत चवमउे .1971, च्वमउे 78 दृ 1978, खाँटी घरेलू औरत– 2004, कितने प्रश्न करूं – 2009।

संपादन एवं अनुवाद – मानवता का बंधन (सामरसेट माम के उपन्यास का अनुवाद), एक कदम आगे (राजस्थान शासन के लिए कहानी संकलन का संपादन), गली–कूँचे (रवींद्र कालिया का संकलन), वर्ष अमरकाल (साहित्यिक आलोचना पर केंद्रित ग्रंथ), पाँच नए एकांकी (एकांकी संकलन), 'टीन एजर' पत्रिका के कविता पृष्ठ का पाँच वर्ष तक सम्पादन।

अन्य रचनाएँ – नई सदी की पहचान – प्रमुख महिला कहानीकार, कितने शहरों में कितनी बार (यात्रा संस्मरण), कल परसों के बरसों (संस्मरण), पढ़ते–लिखते (विविध रचनाएँ) ।

पुरस्कार एवं सम्मान – अपनी लेखनी के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान देने वालीं ममता कालिया जी को अपने पुरस्कार व सममान प्राप्त हुए। ममता जी ने यूरोप व अमेरिका की साहित्यिक यात्राएँ भी कीं। राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में ममता जी की सक्रिय भागीदारी रही है। उन्हें प्राप्त प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मान इस प्रकार हैं : सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद – 1961, उसका यौवन कहानी संग्रह पर उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा यशपाल सम्मान–1985, रचना सम्मान, अभिनव भारती, कोलकाता–1990, एक पत्नी के नोट्स उपन्यास पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का महादेवी वर्मा पुरस्कार–1998, कहानी संग्रह बोलने वाली औरत पर सावित्री बाई फूले सम्मान–1999, साहित्य भूषण सम्मान–उत्तरप्रदेश, हिन्दी सेवा निधि पुरस्कार, कमलेश्वर स्मृति सम्मान, यशपाल स्मृति सम्मान, अमृत सम्मान–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, व्यास सम्मान–2017 (साहित्य अकादमी द्वारा दुक्खम–सुक्खम पर दिया गया प्रतिष्ठित पुरस्कार)।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, भगवती देवी, सुसंस्कृत परिवार की पृष्ठभूमि, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2008, पृ–5.
2. कालिया, ममता, 'स्त्री कलम के ज्यादा निकट होती है' : मेरे साक्षात्कार, संयोजन विद्या भूषण, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ–30–33.
3. कालिया, ममता, 'मै लेखन कर्म में अराजक हू' : मेरे साक्षात्कार, संयोजन विद्या भूषण, किताबघर
4. प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ–30–64.
5. कालिया, ममता, 'पारो और देवदास जैसा प्रेम तपेदिक की ओर ले जाता है' : मेरे साक्षात्कार, संयोजन विद्या भूषण, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ–13.
6. कालिया, ममता, 'साहित्य को वरिष्ठ या गरिष्ठ न होकर घनिष्ठ होना पड़ेगा', : मेरे साक्षात्कार,
7. संयोजन विद्या भूषण, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ–58.
8. कालिया, ममता 'स्त्री कलम के ज्यादा निकट होती है, :मेरे साक्षात्कार, संयोजन विद्या भूषण, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ–33
9. कालिया, ममता, कितने शहरों में कितनी बार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ–19.
10. कालिया, ममता 'स्त्री कलम के ज्यादा निकट होती है,: मेरे साक्षात्कार, संयोजन विद्या भूषण, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ–33.–34
11. कालिया, रवीद्र, सृजन के सहधर्मी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990, पृ–57.
12. कालिया, रवीद्र, सृजन के सहधर्मी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990, पृ–56.
13. कालिया, रवीद्र, सृजन के सहधर्मी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990, पृ–53.
14. कालिया, रवीद्र, सृजन के सहधर्मी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990, पृ–55.
15. कालिया, ममता, कितने शहरों में कितनी बार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ–30..
16. कालिया, ममता, कितने शहरों में कितनी बार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ–20..